# मेहनतक़शों से नफ़रत करने वाली मोदी सरकार पर लानत है!!

**क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा**

देश के लोगों को तो मोदी-भक्ति का नशा उतर ही चुका है, 8, 9, 10 सितम्बर को दिल्ली में हुए जी-20 तमाशे से फ़ासिस्ट मोदी सरकार का असली चरित्र सारी दुनिया को पता चल गया। जिन मज़दूरों-मेहनतक़शों के हाथों के बगैर मोदी के लाडले कॉरपोरेट एक पैसा मुनाफ़ा नहीं कमा सकते, उन्हीं ग़रीबों को मोदी सरकार ने हरे पर्दे लगाकर छुपा दिया उनके सारे जनवादी अधिकार छीन लिए गए उन्हें दोयम दर्ज़े के नागरिक बना डाला। मोदी सरकार की इस घोर मज़दूर-विरोधी ही नहीं बल्कि इंसानियत-विरोधी आपराधिक कार्रवाई से देशभर में मज़दूर तीव्र क्रोधित हैं और मोर्चे-सभाएं कर विरोध प्रदर्शित कर रहे हैं। क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा अपना फ़र्ज़ अदा करने में कैसे पीछे रह सकता है। 10 सितम्बर को 4 बजे सामुदायिक भवन सेक्टर 24 में एक शानदार आक्रोश सभा हुई और 6 बजे आक्रोश प्रदर्शन हुआ जिसमें बारिश के बावजूद बड़ी तादाद में मज़दूरों ने भाग लिया। सबसे महत्वपूर्ण यह रहा महिलाओं की तादाद पुरुषों से ज्यादा थी।

सभा में कॉमरेड्स नरेश, सत्यवीर सिंह, अशोक, शंकर, बबंती ने अपने विचार रखे। जिस देश में 80 करोड़ लोग कंगाली के उस स्तर को छू चुके हैं कि जिंदा रहने के लिए सरकारी खैरात पर निर्भर हैं, उस देश का प्रधानमंत्री विदेशी साम्राज्यवादी लुटेरों की आवभगत के नशे में खुद को विश्वगुरु बनाने की सनक में, अय्याशी पर 4100 करोड़ रुपये (आधिकारिक, असली रक़म 10,000 करोड़ से कम नहीं होगी) खर्च कर डालता है!! सबसे शर्मनाक और ओछेपन की इन्तेहा देखिए 20 देशों के राज्याध्यक्ष मेहमान हैं और सड़क के दोनों ओर खुद की फ़ोटो लाइन से लगी थीं। नीदरलैंड से करोड़ों के ट्यूलिप के फूल, लक्ज़री गाड़ियां और सोने-चांदी के बर्तनों में खाना खिलाते वक़्त शर्म महसूस नहीं करता। ये वही मोदी सरकार है जिसने पैसा बचाने के लिए स्कूली बच्चों के मिड-डे मील के बजट में कटौती की है, वरिष्ठ नागरिकों को रेल सफ़र में मिल रही रियायत छीन ली है। जानलेवा कोविड महामारी और लॉकडाउन में हज़ारों मील पैदल चलते शहीद हुए हज़ारों मज़दूरों को एक पैसा मुआवज़ा देने से बचने के लिए सुप्रीम कोर्ट में झूठ बोला कि सरकार के पास उन मज़दूरों का कोई रिकॉर्ड ही नहीं है।

1999 के भयानक पूंजीवादी संकट से अपनी जान बचाने की क़वायद में 7 सबसे बड़े साम्राज्यवादी देशों के समूह जी-7 में और 13 देश मिला लिए गए और जी- 20 बन गया, जिसका ना कोई हेड क्वार्टर है और ना कोई सचिवालय। इसकी अध्यक्षता बारी-बारी से आती है। 2003 में भी भारत अध्यक्ष था। बीस साल बाद इस साल नंबर आ गया। अध्यक्ष बनने के लिए मोदी ने कोई करामात की ऐसा भ्रम पैदा करना एक छलावा है, झांसेबाज़ी है। पिछले साल इंडोनेशिया अध्यक्ष था, अगले साल ब्राज़ील है। इंडिया का अगला नंबर 2043 में आना है लेकिन तब तक ये लुटेरी व्यवस्था जिंदा ही नहीं रहने वाली। 1999 में जी-20 बनने के बाद भी 2008 में फिर से भयानक पूंजीवादी संकट आया और आज तो संकट व्यवस्थाजन्य बन चुका है जो लूट के इस कोल्हू के साथ ही जाएगा। इसका सूपड़ा साफ होगा तब अपने-अपने देशों के बड़े सरमाएदारों को विश्व बाज़ार का अधिक से अधिक हिस्सा दिलाने के मक़सद से बने ये सारे ग्रुप ग़ायब हो जाएंगे। सर्वहारा की सरपरस्ती में बनी समाजवादी व्यवस्था में ही सही माने में विश्व-बंधुत्व क़ायम होगा।

इंडिया, किस क़िस्म की 'लोकतंत्र की मां' है, दुनिया यह भी जान गई!! चाटुकार पत्रकारों को भी सभागार के बाहर इस तरह शायद ही कभी खदेड़ा गया होगा जैसा मोदी जी ने खदेड़ा था। लोकतंत्र के चौथें खम्भे को 'लोकतंत्र की मां' की असलियत अगर समझ न आए इसके बावजूद भी ज़िल्ले इलाही के क़सीदे पढ़े, तो कोई क्या कर सकता है। अमेरिकियों के लाख कहने पर भी मोदी ने न खुद प्रेस कॉन्फ्रेंस की और न राष्ट्रपति जो बाईडेन को करने दी। उन्हें भी क्या फर्क पड़ता है जब तक उनके ड्रोन डबल क़ीमत में बिक रहे हैं!! वहां भी तो जनवाद का दिखावा ही है। ट्रम्प ने अपनी गुंडा वाहिनी से जनवाद के अमेरिकी मंदिर, 'कैपिटोल हिल' पर चढ़ाई करवा दी थी, जजों के सिंहासन पलट दिए गए थे, उनके विचित्र मुकुट फाड़ डाले गए थे, ट्रम्प का कहां कुछ हुआ। जेल जाना तो छोड़िए वह फिर से चुनाव लड़ने की फ़िराक में है। बुर्जुआ जनवाद एक धुंधलका ही तो होता है। क्या इंडिया और क्या अमेरिका!! एशिया से यूरोप तक सड़क बनेगी हर तरफ़ विकास की हरी कोंपलें फूटेंगी, ये जुमले, शेखचिल्ली के किस्सों की तरह सुनाई पड़ते हैं। सालों से यूरोप जल रहा है, एशिया को सुलगाया जा रहा है। साम्राज्यवाद अब बस तबाही ही दे सकता है।

सभा के बाद सामुदायिक भवन परिसर में ही ज़ोरदार नारों के बीच तीव्र आक्रोश प्रदर्शन हुआ। ये नारे आकाश में गूंज रहे थे; 'जी-20 के साम्राज्यवादी लुटेरों वापस जाओ', 'मज़दूरों-मेहनतक़शों से नफ़रत करने वाली मोदी सरकार पर लानत है', 'जी-20 का वीभत्स तमाशा बंद करो', 'भूखी जनता के पैसे से अय्याशी करने वालों शर्म करो', 'गरीबों-मेहनतक़शों का अपमान नहीं सहेंगे', 'कौन बनाता हिंदुस्तान-भारत का मज़दूर किसान', 'हम इतिहास बदल देंगे- इन फ़ौलादी हाथों से', 'मज़दूर जब भी जागा है- इतिहास ने करवट बदली है', 'साम्राज्यवाद का नाश हो', 'पूंजीवाद की क़ब्र खुदेगी- आज नहीं तो कल खुदेगी'। प्रदर्शन के दौरान, कामरेड्स नरेश, सत्यवीर सिंह, अशोक कुमार, मुकेश कुमार और चंदन कुमार ने साथियों को संबोधित किया, उनका हौसला बढ़ाया।

# कश्मीर में भारतीय सेना के कर्नल, मेजर और पुलिस के डीएसपी की शहादत पर भारत का मिडिल क्लास क्या सोच रहा है?

**हेमंत कुमार झा**

वह कुछ नहीं सोच रहा है। वह भावुक हो रहा है उन अफसरों की जवान शहादत पर, फिर गर्व से भर जा रहा है।

एंकर उन अफसरों की जांबाजी के किस्से और राष्ट्र के प्रति बलिदान की महिमा बता रहे हैं, अपने गद्देदार सोफे या मुलायम बिस्तरों पर अधलेटे मिडिल क्लास की रगों में देशप्रेम ज्वार मारने लगता है। उधर एंकरानी उन शहीदों के मासूम बच्चों और परिवारों के बारे में रिपोर्ट देती भावुकता की धारा बहा दे रही है।

बलिदानों पर भावुक होकर और फिर गर्व कर लेने के बाद सब अपने सुख-दुःख में बिजी हो जा रहे हैं और कल के अखबारों में कश्मीर या फिर उन शहादतों के बारे में छपे किसी नए अपडेट पर ध्यान तक देने की उन्हें फुरसत नहीं होगी।

दरअसल, वे इस पर सोचते ही नहीं कि आखिर ऐसा क्या मामला है कि उनके जन्म के भी पहले से चला आ रहा, हजारों जवानों की कुर्बानी ले चुका यह विवाद सुलझने का नाम ही नहीं ले रहा। वे इस पर नहीं सोचते, जरा भी नहीं सोचते।

हां, "कश्मीर मांगोगे तो चीर देगें" जैसे डायलॉग उन्हें जोश से भर देते हैं।

उनके लिए कश्मीर एक पर्व है...बलिदानों पर गर्व का, भावुकता का, रगों में देशप्रेम की लहर का।

देश में उनकी आबादी चालीस-पैंतालीस करोड़ के करीब है, लेकिन एक सौ पैंतालीस करोड़ लोगों के इस देश की राजनीति में उनका निर्णायक वर्चस्व है।

कश्मीर पर निर्णय कश्मीर के लिए नहीं, बाकी देश के मानस को देख कर लिए जाते रहे हैं। भाजपा सरकार ने इस मानस को अपनी वैचारिकी के अनुकूल मोड़ने में बहुत हद तक सफलता हासिल की और फिर ऐतिहासिक निर्णय लिए गए। लेकिन, शांति हासिल नहीं हुई।

अशांत कश्मीर है, देश का मिडिल क्लास अशांत नहीं। वह अपने काम धंधे में लगा है। कश्मीर की अशांति का वह अभ्यस्त हो गया है। उसके पिता भी कश्मीर विवाद की खबरें पढ़ते-सुनते बूढ़े होकर एक दिन मर गए, बचपन से वह भी इन खबरों से गुजरते बूढ़ा होने को आया, कल उसके बच्चे भी जवान शहादतों पर भावुक होंगे, फिर गर्व करेंगे, फिर अपनी दुकान पर तीन का तेरह करने में लग जाएंगे।

मध्य वर्ग युद्धों से नफरत करता है, इनसे उसकी सहज कामकाजी जिंदगी में असहजता आती है। लेकिन, जब राष्ट्र-राष्ट्र की रट लगती है, सारा आलम प्रोपेगेंडा के धुंध से भर जाता है तो इनकी रगों में भी उबाल आ जाता है।

इन्हीं उबालों की तो जरूरत है। राजनीति के लिए यह जरूरी है।

उधर, पाकिस्तान में तो राजनीति की धुरी ही कश्मीर समस्या है। कश्मीर पर जनता के बीच उबाल वहां के राजनीतिज्ञों के लिए जरूरत है जबकि वहां की सेना के लिए यह सबसे बड़ा हथियार है।

इधर, भारत में भाजपा की बड़ी सफलता रही कि उसने इस राजनीतिक हथियार को नई चमक और धार दे दी। धर्म का भी एंगल जो है।

**राष्ट्र और धर्म के घालमेल में जब सेना को भी सान दिया जाए तो बलिदानों पर भावुकता अपने अतिरेक को छूने लगती है, गर्व सीने में बेकाबू धौंकनी बन कर सोचने विचारने की शक्ति का हरण कर लेता है...और तब, कोई संगठन, कोई नेता राष्ट्र, धर्म और सेना के साथ खुद को एकाकार दर्शाता एक नया राजनीतिक परिदृश्य रचता है, देश को नया परिवेश देता है।**

कश्मीर का ताजा सूरते हाल इसी नए राजनीतिक परिदृश्य, नए परिवेश के निर्माण की कोशिशों का एक नया नतीजा है।

कश्मीर अशांति के अंतहीन अंधेरों की गिरफ्त में है लेकिन वहां के आम लोगों की जिंदगी की दुश्वारियों को बयान करती किसी रिपोर्ट को पढ़ने या जानने की कोई जिज्ञासा मिडिल क्लास में नहीं। भारत का मध्य वर्ग कई संदर्भों में एक महान अध्याय है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की निर्णायक शक्ति, दुनिया का सबसे बड़ा बाजार।

दुनिया में देश की बढ़ती प्रतिष्ठा का समानुपातिक संबंध भारतीय मध्य वर्ग की बढ़ती समृद्धि से है।

यही कारण है कि भारतीय राजनीति के केंद्र में नीचे के पचास करोड़ लोग नहीं, ऊपर के पचास करोड़ लोग हैं।

मध्यवर्ग की इस बढ़ती समृद्धि में विशाल वंचित आबादी के अमानवीय शोषण की बड़ी भूमिका है।

यही कारण है कि राजसत्ता और बाजार के द्वारा नीचे के पचास करोड़ लोगों के शोषण में मध्यवर्ग की बराबर की भागीदारी है। अपने उदय काल से बीती शताब्दी के अंत तक मध्य वर्ग का निम्न वर्ग से इतना विषम संबंध कभी नहीं रहा जितना अब है। यही बीते ढाई-तीन दशकों की राजनीतिक आर्थिकी का सामाजिक निष्कर्ष है।

इस सामाजिक निष्कर्ष ने, आर्थिक उदारवाद के सहजात उपभोक्तावाद की तीव्र आंधी ने मध्य वर्ग को अति स्वार्थी होने की हद तक आत्मनिष्ठ बना दिया। उसकी उपभोक्तावादी आत्मनिष्ठ सोच में कश्मीर या मणिपुर जैसी घटनाएं ऐसी संवेदनशीलता नहीं जगा पातीं कि वह राजनीतिक षडयंत्रों को समझने की जहमत मोल ले।

वह प्रोपेगेंडा से जन्मे प्रचलित और लोकप्रिय नैरेटिव्स से सहज ही प्रभावित होता है और इन्हीं के अनुसार उसकी राजनीतिक सोच भी ढलती है। यहीं आकर राजनीति का कुचक्र और मध्य वर्ग का मानस एक धरातल पर आ कर मिल जाते हैं और पीछे रह जाते हैं राजनीति के शिकार अशांत क्षेत्रों के लोग, प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर वनाच्छादित इलाकों के आदिवासी, जीने की जद्दोजहद से जूझती हाशिए की आबादी।

कभी समाज को दिशा देने वाला मिडिल क्लास आज वैचारिक स्तरों पर खुद दिशाहीन है और उन आर्थिक-राजनीतिक षडयंत्रों से घिरा भी, जो उससे अधिक उसके बच्चों की पीढ़ी के लिए घातक साबित होने वाले हैं।

बावजूद इसके कि भारत की राजनीति पर मिडिल क्लास का वर्चस्व है, इसके पास वह दृष्टि नहीं जो कश्मीर के समाधान पर कुछ सार्थक सोच सके, अस्तित्व के अधिकारों के लिए संघर्ष करते आदिवासी समूहों के साथ कोई सामंजस्य बिठा सके, हाशिए की पचास करोड़ आबादी को मनुष्य होने की गरिमा पाने में सहयोगी हो सके।

सुबह में जो लोग टीवी पर या मोबाइल पर कश्मीर की शहादतों पर भावुक हो रहे थे, गर्व फील कर रहे थे, दोपहर में वे शाहरुख के 'जवान' के हिट होने की चर्चा कर रहे होंगे और शाम होते होते एशिया कप के फाइनल में भारत की संभावना पर विमर्श में लीन हो गए होंगे।

यह अलग विमर्श का विषय है कि भारत का मिडिल क्लास मनुष्यता के प्रति इतना निरपेक्ष कैसे होता गया कि वह मनुष्यता विरोधी लगने लगा है।

# किसान नेताओं ने उन बच्चों को पीड़ित बच्चे से गले मिलवाया जिनसे मुजफ्फरपुर स्कूल टीचर ने पिटवाया था

**अरुणेश**

**नफ़रत के खिलाफ यह जंग कोई नेता नहीं लड़ सकता। यह जंग आम भारतीयों को लड़नी पड़ेगी।**

**छोटा उद्योगपति, दुकानदार, किसान, मजदूर, नौकरीपेशायह भारत की अस्सी फीसद से ज्यादा आबादी है। जिनके बच्चों का भविष्य खतरे में है।**

**नफ़रत वो अफोर्ड कर सकते हैं जिनके पेट भरे हुए हैं। जमीन जायदाद है। खुद या बच्चे अच्छी नौकरियों में है।**

**और ये सिर्फ हिंदुओं में नहीं है। ऐसे लोग हिंदू हैं तो हिंदू राष्ट्र की बात करेंगे, सिख हैं तो खालिस्तान की बात करेंगे, मुस्लिम हैं तो आलमे इस्लाम की बात करेंगे।**

**ये इनका टाइम पास है, ये इनकी दुकानदारी है, ये इनके लिए क्षद्म गौरव की तलाश है।**